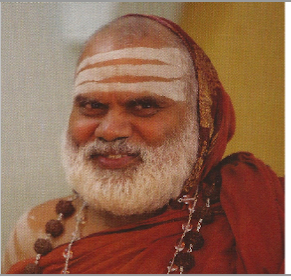

Voice of Jagadguru

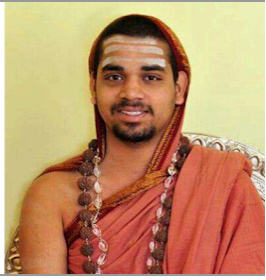

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

अनुग्रह भाषण

केवल स्वीकार करने के इच्छुक लोगों को ही सलाह दें

इस दुनिया में सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं। हमारे पूर्वजों ने इस तथ्य को इस प्रकार व्यक्त किया हैः न ही सर्वः सर्वं जानती।

हो सकता है किसी को कुछ पता हो, और हो सकता है कि कुछ और पता न हो। जो हम नहीं जानते हैं, हमें दूसरों से सीखना चाहिए, और दूसरों को वह देना चाहिए जो हम जानते हैं।

लेकिन कुछ लोग दूसरों से सीखने के लिए इच्छुक नहीं होते हैं। हमें ऐसे लोगों को सलाह देने का प्रयास नहीं करना चाहिए। वे न केवल हमारे अच्छे शब्दों का तिरस्कार करेंगे, बल्कि हमारा अपमान भी करेंगे।

श्रीमद रामायण का उदाहरण लीजिए। विभीषण ने रावण को सही रास्ते पर लाने की कोशिश की। लेकिन बाद वाले (रावण) ने इस सलाह को नजरअंदाज कर दिया और विभीषण को अपमानित किया।

इसी तरह, महाभारत में, कई लोगों ने दुर्योधन को धार्मिक मार्ग सिखाने का प्रयास किया; लेकिन उन्होंने सभी परामर्शों को नजरअंदाज कर दिया। हमें ऐसे लोगों को शिक्षित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

यदि आप एक सफेद कपड़े को रंग से रंगते हैं, तो यह रंग(सफेद रंग) को अवशोषित कर लेगा। लेकिन एक रंगीन कपड़ा आसानी से किसी अन्य रंग को स्वीकार नहीं करेगा। इसलिए, हमें केवल उन्हीं लोगों को सलाह देनी चाहिए जो हमारी बातों पर ध्यान देने की इच्छा रखते हैं। दूसरों को सलाह देने से बचना बेहतर है।

वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम् ।
स्थायी भवति चात्यन्तं रागः शुक्लपटे यथा ॥

vacastatra prayōktavyaṁ yatrōktaṁ labhatē phalam |
sthāyī bhavati cātyantaṁ rāgaḥ śuklapaṭē yathā ||

--जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

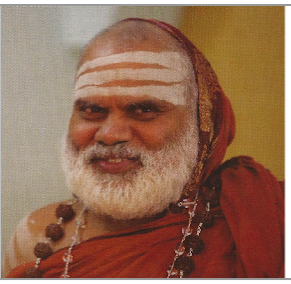

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

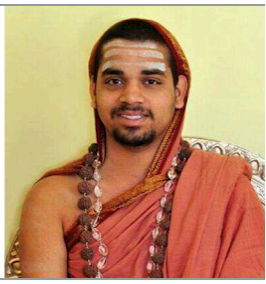

||आत्मबोध:||

||ātmabodha:||

वपुस्तुषादिभिः कोशै- र्युक्तं युक्त्यावघाततः ।
आत्मानमन्तरं शुद्धं विविच्यात्तण्डुलं यथा ॥ १६ ॥

vapustuṣādibhiḥ kośai- ryuktaṃ yuktyāvaghātataḥ |
ātmānamantaraṃ śuddhaṃ
vivicyāttaṇḍulaṃ yathā || 16 ||

विवेकी आत्म-विश्लेषण और तार्किक सोच के माध्यम से व्यक्ति को अपने भीतर की शुद्ध आत्मा को आवरणों से अलग करना चाहिए क्योंकि व्यक्ति चावल को भूसी, चोकर आदि से अलग करता है, जो इसे ढक रहे हैं।

सदा सर्वगतोऽप्यात्मा न सर्वत्रावभासते ।
बुद्धावेवावभासेत स्वच्छेषु प्रतिबिम्बवत् ॥ १७ ॥

sadā sarvagato'pyātmā na
sarvatrāvabhāsate |
buddhāvevāvabhāseta svaccheṣu
pratibimbavat || 17 ||

आत्मा हर चीज में चमकती नहीं है, हालाँकि वह सभी में व्याप्त है। वह केवल आंतरिक उपकरण में प्रकट होता है, बुद्धि (बुद्धि) जैसे कि एक स्वच्छ दर्पण में प्रतिबिंब के रूप में।

(जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य श्री सन्निधानम श्री श्री विधुशेखर भारती महास्वामीजी शिवगंगई में 15-16 मई, 2017, विजय यात्रा))

देहेन्द्रियमनोबुद्धि- प्रकृतिभ्यो विलक्षणम् ।
तद्वृत्तिसाक्षिणं विद्या दात्मानं राजवत्सदा ॥ १८ ॥

dehendriyamanobuddhi- prakṛtibhyo vilakṣaṇam |
tadvṛttisākṣiṇaṃ vidyā dātmānaṃ rājavatsadā || 18 ||

यह समझना चाहिए कि आत्मा हमेशा राजा की तरह होती है, जो शरीर, इंद्रियों, मन और बुद्धि से अलग होती है, जो सभी पदार्थ (प्रकृति) का गठन करते हैं और उनके कार्यों का गवाह है।

(जारी रहेगा...)

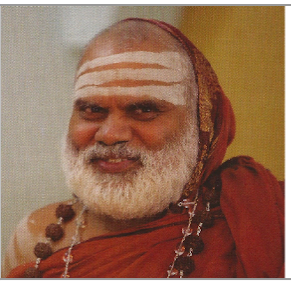

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

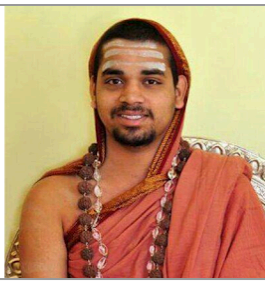

धर्मशास्त्र का मार्ग

इस भाग में हम प्रश्नोत्तर रूप में "धर्मशास्त्र का मार्ग" देखेंगे। "धर्मशास्त्र" से संबंधित हमारी शंकाओं के समाधान के लिए, पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्भवानंद आश्रम, वेदपुरी, थेनी, वैदिक शास्त्रों के अनुसार हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

1. ऐसा कहा जाता है कि पीपल (अश्वत्थ) और नीम प्रकृति माता के वृक्षों के साम्राज्य की शाही संतान हैं। कृपया इसका महत्व समझाइए।...

अश्वत्थ वृक्ष और निम्बा वृक्ष को बहुत खास और शुभ माना जाता है। अश्वत्थ वृक्ष का उल्लेख श्री विष्णु सहस्रनाम में भाग, न्यग्रोध उदुम्बर अश्वत्थ, में किया गया है। भगवान ने यह भी उल्लेख किया है कि ईश्वर विभूति (ईश्वर की महिमा) पर अध्याय में वे वृक्षों में अश्वत्थ वृक्ष हैं। (अश्वत्थ: सर्ववृक्षाणां,भगवद गीता अध्याय X श्लोक 26) आयुर्वेद के अनुसार अश्वत्थ वृक्ष के विभिन्न भाग विभिन्न प्रकार की बीमारियों को ठीक करने में सक्षम हैं। अश्वत्थ वृक्ष एक ऐसा वृक्ष है जिसमें पानी की न्यूनतम खपत और ऑक्सीजन का अधिकतम योगदान होता है। नीम का पेड़ अपने औषधीय गुणों के लिए भी जाना जाता है। इसका उपयोग दिव्य माता की पूजा में किया जाता है।

2. हम पीपल और नीम के पेड़ों से शादी करने और विनायक और नागराज का प्रथिस्त करने का पारंपरिक समारोह कर रहे हैं। यह क्या इंगित करता है?

हम ईश्वर की पूजा कर रहे हैं, जो हर जगह मौजूद है। हमारे पास एक भगवान की अवधारणा या कई देवताओं की अवधारणा नहीं है। हमारे पास बस इतना ही है, "केवल भगवान हैं।" हम वनस्पति साम्राज्य के प्रतिनिधि के रूप में अश्वत्थ वृक्ष की पूजा करते हैं। अश्वत्थ वृक्ष पुरुष शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है और नीम का वृक्ष स्त्री शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। उनसे शादी करने का पारंपरिक समारोह परिवार में शुभता लाता है। श्री विनायक और श्री

नागराज का प्रथम और उनकी पूजा, भक्तों को खुशहाल वैवाहिक जीवन और संतान का आशीर्वाद देता है। यह हमारे लोगों की श्रद्धा की अभिव्यक्ति है, जिसका सदियों से पालन किया जाता रहा है। यह देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न

रूपों में प्रचलित है।

3. हमारे दैनिक धर्म में पंच महा यज्ञ में प्रकृति की पूजा और सुरक्षा का उल्लेख किया गया है। क्या यह केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है, या यह कोई भी कर सकता है। यदि ऐसा है तो सभी इस यज्ञ को कैसे करें।

ईश्वर की पूजा (देव यज्ञ) पूर्वजों की पूजा, माता-पिता (पितृ यज्ञ) पादप साम्राज्य की देखभाल करना और पशु साम्राज्य (भूत यज्ञ) साथी मनुष्यों (नर यज्ञ) की मदद करना और निर्धारित ग्रंथों (ब्रह्म यज्ञ) को सीखना पंच महा यज्ञ हैं। यह विशेष रूप से किसी भी समुदाय से संबंधित गृहस्थ (एक गृहस्थ) के लिए है। हमारी संस्कृति गृहस्थ को एक अलग इकाई के रूप में नहीं देखती है। गृहस्थ को अपने धर्मपत्नि (पत्नी) की सहायता से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना पड़ता है। अर्थात्, पंचमह यज्ञ के रूप में पति के कर्तव्यों और पत्नी के कर्तव्यों को एक साथ निर्धारित किया जाता है।

(जारी रहेगा..)

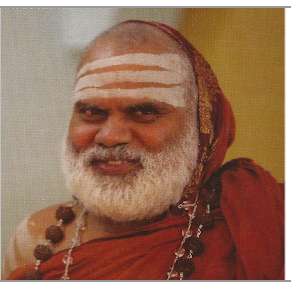
Voice of Jagadguru
advaitam paramanandam
an e-magazine on advaita
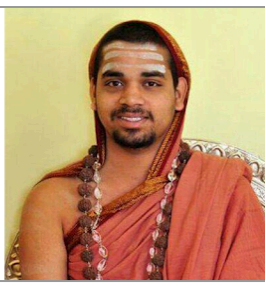

पूजा विधान

हमारे सनातन धर्म में, दैनिक पूजा को हमें यह जीवन प्रदान करने और हमारे कर्मों के आधार पर हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करने के लिए सर्वोच्च सर्वशक्तिमान (भगवान) को हमारी जरूरतों को व्यक्त करने का सबसे सरल तरीका माना जाता है। यह भगवान और पिछले युगों की परंपरा के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का एक विनम्र तरीका है। ऋषियों के समय से, दैनिक पूजा ने आध्यात्मिक अभ्यास और आराधना दोनों के रूप में अपना महत्व प्राप्त कर लिया है। सुबह के दौरान की जाने वाली यह पवित्र गतिविधि दिन शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका है और यह लोकप्रिय संस्कृत कहावत, "सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु" जिसका अर्थ है सभी के लिए शुभकामनाएं।

पूजा करना आपकी उम्र, लिंग या सामाजिक स्थिति तक सीमित नहीं है। एकमात्र चीज जो मायने रखती है वह है विशुद्ध समर्पण और शुद्ध भक्ति। हममें से अधिकांश लोग दैनिक पूजा करते हैं लेकिन कहीं न कहीं हम सही तरीके से भगवान की पूजा करने की प्रक्रिया के बारे में अनिश्चित होंगे। आइए जानते हैं कि अधिकतम संतुष्टि पाने के लिए व्यवस्थित और सरल तरीके से घर पर पूजा कैसे की जाए।.

दैनिक पूजा या नित्य पूजा क्या है?

संस्कृत में पूजा का अर्थ आदर करना या पूजा करना है और हर दिन की जाने वाली पूजा को नित्य पूजा या दैनिक पूजा कहा जाता है। हमें इस मानव जीवन और प्रेम का आशीर्वाद देने के लिए भगवान के प्रति अपना आभार व्यक्त करने के लिए यह एक सूक्ष्म कार्य है।

दैनिक पूजा सुबह क्यों की जाती है?

सुबह को पूजा करने के लिए शुभ कहा जाता है और इन घंटों के दौरान की जाने वाली कोई भी पवित्र गतिविधि अधिक फलदायी होती है। पूजा मन को शांत और शांतिपूर्ण बनाने की मांग करती है और रात में लंबे आराम के बाद सुबह जितना शांत कोई समय नहीं होता है। वेदों में कहा गया है कि सुबह के समय ईश्वरीय शरीर प्रार्थनाओं के प्रति अधिक ग्रहणशील होंगे और हमें ध्यान की स्थिति में रहने के लिए प्रेरित करते हैं।

दैनिक पूजा के लिए खुद को तैयार करें

पूजा शुरू करने से पहले अपने शरीर और मन को तैयार करना आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। एक दिन पहले, पूजा के लिए अपने कपड़ों को भिगो कर और सुखाकर अलग से तैयार रखें। पूजा करते समय केवल इन कपड़ों को ही पहनें। जब आप अपने कार्यालय और पार्टी के लिए एक निश्चित ड्रेस कोड का पालन करते हैं, तो पूजा पुरुषों के लिए धोती और शॉल और महिलाओं के लिए पारंपरिक साड़ियों जैसी ड्रेस कोड में आती है। ये पूजा के दौरान नेक विचारों का आह्वान करेंगे

दैनिक पूजा या पूजा करना

आमतौर पर, प्रत्येक घर में पूजा करने के लिए एक अलग जगह होगी या आप एक ऐसी जगह चुन सकते हैं जहाँ कम व्याकुलता हो।

1. उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके कपड़े या चटाई के टुकड़े पर बैठें।

2. सबसे पहले, आप पानी की कुछ बूंदें छिड़ककर जगह और मूर्तियों को साफ करेंगे। मूर्तियों को पोंछने के लिए एक अलग कपड़े का उपयोग करें और बाद में मूर्तियों पर कुमकुम लगाएं।

3. दीप जलाएँ और सुनिश्चित करें कि आप मंडप के दोनों ओर दो दीप (दिया) रख रहे हैं-एक पूर्व की ओर (सूर्य की ओर) या दूसरा उत्तर की ओर (भगवान के लिए)।

4. दीप प्रज्वलित करने के बाद, आप गणेश स्तोत्रम से शुरुआत करेंगे और उसके बाद गुरु स्तुति करेंगे क्योंकि वेद भगवान से अधिक गुरु को महत्व देते हैं।

5. फिर, आप स्तोत्र के रूप में अपने भगवान की स्तुति में श्लोकों और भजनों का जाप करना शुरू करेंगे। अपने समय और सुविधा के अनुसार, आप अपनी पारिवारिक परंपराओं के अनुसार जितने चाहें उतने श्लोक पढ़ें और सुनाएँ।

6. श्लोकों से पूजा करने के बाद आप भगवान को फूलों से सजाते हैं और अगरबत्ती अर्पित करने के बाद नैवेद्य (भोग) चढ़ाते हैं।

7. अंत में, आप कपूर जलाकर और आरती करके पूजा सम्पन्न करेंगे।

8. संध्यावंदन करने वाले दैनिक पूजा की शुरुआत आचमन और गायत्री मंत्र से करेंगे।

(जारी रहेगा..)

Our Website link : https://voiceofjagadguru.com/

Telegram Channel : https://t.me/voiceofjagadguru

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: https://chat.whatsapp.com/Ly4wlaTu8Kc3sjjEYU8KGu

YouTube Channel : https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UlI

Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringeri
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand	Web Director	Coimbatore
Smt B Srimathi Veeramani	Web Asst Director & Chief Editor	Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli
Sri M Venkatachalam & Team	Translator/writer	Tiruvananthapuram